RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper

भारतीय संस्कृति में श्री हनुमान की देन

शिव स्वरूप राम

शोधार्थी, संस्कृत विभाग वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (बिहार)

रामायण महामाला के महारत्न, महाकवि वाल्मीकि के अलौकिक आदर्श, भारत के गौरव, सशक्त साहस एवं शौर्य की प्रतिमूर्ति, सुगति–सुमति– समन्वित समीर–सुत, चरित्र सम्राट नैतिकता, आदर्शता एवं सुचिता–समन्वित श्री हनुमान् भारतीय संस्कृति के पावन प्राण स्वरूप हैं। इस सांस्कृतिक महापुरुषों के अभाव में भारत का सांस्कृतिक स्वरूप निखरने के बजाय बिखर जायेगा। संस्कार एवं संस्कृति की पवित्र प्रतिमूर्ति श्री हनुमान् भारतीय संस्कृति के एक सशक्त शिखर पुरुष हैं। उनका अनुपम जीवन–दर्शन भारतीय नवजवानों के लिए एक महानतम आदर्श है।

भारतीय संस्कृति के सलिल संरक्षक श्री हनुमान्

शौर्य–सुमेरु, शक्ति–सम्राट, शील–सिन्धु, सौन्दर्य–सुधाकर, महाकवि वाल्मीकि के जीवन–धन श्री हनुमान् भारतीय संस्कृति के सलिल संरक्षक के साथ–साथ सौम्य संस्थापक भी हैं। राक्षस–राज रावण भारत की मानवीय संस्कृति को मिटाकर राक्षसी संस्कृति की स्थापना करना चाहता है। कोई भी देश किसी देश की संस्कृति को मिटाने चलता है, तो उसे गुलाम बनाने का षडयन्त्र रचता है। ताड़का–सुबाहुँ के नेतृत्व में राक्षसों की अपार सेना (लगभग 90 हजार) व्याघ्रसर अर्थात् बक्सर में स्थापित किये हुए हैं। खर और दूषण के नेतृत्व में राक्षसों के बहुत बड़े समूह को (लगभग 65 हजार) भारत के दक्षिणी भाग में स्थापित कर दिया है। साथ ही वालि के साथ रावण ने सैन्य–सन्धि भी कर ली है। उसका लक्ष्य है चौतरफा आक्रमण कर भारत को गुलाम बना देना। इसी संदर्भ में भारत की संस्कृति– माता की पवित्र प्रतिमूर्ति सम्मान्या सीता अपहरण भी करता है। रामायण के वीरवर हनुमान् अपने कर्त्तव्यों के सहारे रावण की सारी योजना समाप्त कर देते हैं। सुग्रीव–श्रीराम की मैत्री के माध्यम से वालिवध, अक्षय–कुमार सहित अनन्त राक्षसों का वध सीता–माता का अन्वेषण के साथ–साथ लङ्का–दहन, राम–रावण–युद्ध में अपरिमित साहस एवं शक्ति का परिचय दे भारतीय संस्कृति के प्रबल संरक्षक के साथ–साथ अपने दायित्वों के पालन एवं चारुमय चरित्र का प्रदर्शन कर सौम्य संस्कृति के सलिल संरक्षक के रूप में दीख पड़ते हैं।

भारतीय संस्कृति का आदर्श सिद्धान्त है–

''सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु माकश्चिद् दुख भाग भवेत्।।''

संसार के सभी प्राणियों को आत्मवत मानते हुए उनके प्रति प्रेमक, करुणा, उपकार, क्षमा, दया, अहिंसा, सहिष्णुता के साथ–साथ निष्काम भाव से काम करने की क्षमता प्राप्त करना ही भारतीय संस्कृति की अनुपम विशेषताएँ हैं। भारतीय संस्कृति के आधार पर जो जीवन प्रणाली निर्मित हुई है, उसकी प्रगति आध्यात्मिकता की ओर, पूर्णता की ओर, ईश्वरत्व की ओर है। अपने अभ्युदयकाल में अर्जित सौभाग्य और सम्पति का उपयोग व्यक्तित्व सुख के लिए न कर उसे देश के लिये, समाज के लिये, लोक–कल्याण में सर्वभावेन समर्पित कर देना ही हमारा उद्देश्य है। प्राचीनता, आदर्शता एवं महानता के कारण भारतीय संस्कृति विश्व में प्रधान संस्कृति रही है–

''अनादि अमर अम्लान, भारतीय संस्कृति विश्व–प्रधान।
आर्यो के गौरव–गुण–गान, भारतीय संस्कृति तुम्हें प्रणाम।।''

भारतीय संस्कृति के मुख्य अङ्ग ब्रह्मचर्यत्व –

ब्रह्मचारी को भारत का अति महान माना जाता है। वस्तुतः संसार में ब्रह्मचर्यत्व ही एक ऐसी महान शक्ति है, जिसके द्वारा मनुष्य महान कार्य कर सकता है। सच्चे ब्रह्मचारी के लिए कोई भी कार्ये असंभव नहीं है।

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved *ISSN:* 2349-7637 (Online)

मनुष्य की शक्ति इन्द्रियों के माध्यम से सुख में व्यय होने लगती है तब वह संसार के ऊपर नहीं उठ सकता है। संत हनुमान् ब्रह्मचारियों में अग्रगण्य हैं। अखण्ड ब्रह्मचर्य के पवित्र प्रतीक हैं। ब्रह्मचर्य का जीवन में समुचित ढंग से अगर किसी ने उतारा है तो वह हैं श्री हनुमान् ही–

''अञ्जनी गर्भ सम्भूतो वायु पुत्रो महाबलः।
कुमारो ब्रह्मचारी च हनममन्ताय नमो नमः।।''

भारतीय संस्कृति के प्राण स्वरूप धर्म (अध्यात्म) के संरक्षक श्री हनुमान्

धर्म अर्थात् अध्यात्म ही हमारे राष्ट्र का जीवन–प्रवाह है। धर्म देश के नागरिकों को चरित्रवान् बनाता है और चरित्रवान् नागरिक ही देश की उन्नति के पावन शिखर तक पहुँचा सकते है। धर्म से संस्कृति बनती है और संस्कृति से ही विशिष्टम व्यक्तित्व का सृजन होता है। इतिहास सम्राटों का नहीं बल्कि आदर्शचरित्रों की गाथा होता है और व्यक्तित्व का सृजन संस्कृति और साहित्य से होता है।

भारतीय संस्कृति में धर्म का महत्त्व और उसके रक्षक हनुमान्–

भारत एवं भारतीयों की आत्मा राजनीति में नहीं वरन् धर्म में निवास करती है। भारत एवं भारतीयों का जीवन–दर्शन राजनीति नहीं, सैन्य–शक्ति भी नहीं और न व्यावसायिक आधिपत्य ही है। इन सबों के अतिरिक्त और कुछ यदि है, तो वह है धर्म। केवल धर्म ही हम भारतीयों की निधि रही है। अध्यात्म अर्थात् धर्म के अभाव में भारत कभी जीवित नहीं रह सकता। अस्तु, भारत के प्राण–तत्व धर्म की रक्षा के निमित ही देवाधिदेव महादेव भक्तराज भोले भगवान् शिव ने हनुमान् रूप में अवतार धरण किया।

कहा गया है– ''धर्मो विश्वस्य जगतः प्रतिष्ठा'' अर्थात् धर्म ही लोक और समाज की मर्यादा की रक्षा करता है। धर्म के ह्रास होने से नैतिक चरित्र का पतन होता है। धर्म–विहीन जीवन या समाज अनुशासन–हीन होकर महापतन के गर्त में गिर जाता है। जीवन–शासन का प्रथम सोपान है आदर्श और उस आदर्श का आधार है धर्म। और, इसी आदर्श–समन्वित धर्म का संरक्षक एवं संस्थापक हैं हमारे हनुमत् लाल जी। ईश्वर एवं मानव, आत्मा एवं परमात्मा का मिलन जिन गुणों, नियमों, आचरणों एवं प्रवृतियों से होता है वही धर्म है। आद्य शङ्कराचार्य ने भी सीता–माता की व्यथा दूर करने वाले, अपनी स्फूर्ति से श्रीराम का प्रभाव व्यक्त करने वाले, दशानन की कीर्ति का विनाश करने वाले श्री हनुमान् की मोहक महनीय मूर्ति को एक बार पुनः इस कराल कलिकाल में प्रकाशित होने की प्रार्थना करते दीख पड़ते हैं–

''दूरी कृत सीतार्तिः प्रकटी कृत राम वैभव स्फूर्तिः।
दारित दशमुख कीर्तिः पुरतो मम भाति हनुमतो मूर्तिः।।''

आज भारतीय संस्कृति सम्पूर्ण विश्व के संस्कृति धरातल पर वाल्मीकि के हनुमान् अनुकरणीय है। संस्कृति पतन होती जा रही है मानवता के स्थान पर मानव रूपी शरीर में पशुता की वृति दिनों–दिन बढ़ती जा रही है। धर्म और संस्कृति दूषित हो गयी तो संस्कार का नष्ट होना स्वभाविक है। इसका एक मात्र निराकरण हमारे वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संस्कृति पुरुष, त्याग सम्राट, त्याग की पवित्र प्रतिमूर्ति हमारे हनुमान् का सम्पूर्ण जीवन ही त्याग दर्शन के समान है। भारतीय संस्कृति के प्रबल संरक्षक के साथ–साथ अपने दायित्व के पालन एवं चारूमय चरित्र का दर्शन कर सौम्य संस्कृति के सलिल संरक्षक के रूप में दीख पड़ते है। जो मानव–प्राणी मात्र के अनुकरणीय है।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. वा०रा० पाठ विधि, पृ. 3
2. श्री रामचरित मानस, बाल काण्ड, दोहा 25/3
3. भारतीय ऋषि
4. हितोपदेश
5. हनुमत पञ्चरात – 4